: दूसरा अध्याय :

उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों का संक्षिप्त विवेचन

: दूसरा अध्याय :

उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों का संक्षिप्त विवेचन

२.१ जय-पराजय :-

"जय-पराजय" इस नाटक का प्रथम प्रकाशन सन १९३७ को हुआ है। अश्क का यह प्रथम और एकमात्र ऐतिहासिक नाटक है। उनके बाकी सभी नाटकों की अपेक्षा यह बड़ा भी है। इस नाटक की कथा मेवाड और मंडोवर इन दो राज्यों से संबंधित हैं। मेवाड़ के राणा लक्ष्नसिंह के दो पुत्र हैं युवराज चंड और राघवदेव। मेवाड़ के पडोसी राज्य मंडोवर के अधिपति रावल चूड़ावत हैं। चूड़ावत की दो रानियों में से बड़ी रानी कुसुम का लड़का है रणमल और छोटी रानी तारा की एक लड़की है, जिसका नाम है हंसाबाई। रणमल को रावल चूड़ावत अपनी छोटी रानी के कहने पर निर्वासित कर देते हैं। रणमल मेवाड़ में आकर आश्रय लेता है।

रावल चूड़ावत तारा के कहने के अनुसार अपनी पुत्री हंसा के विवाह का नारियल युवराज चंड के लिए भेजते हैं। मंडोवर का पुरोहित जब नारियल लाता है तो राणा लक्ष्नसिंह मजाक में कह देते हैं "युवराज के लिए होगा, हम बूढ़ों के लिए नारियल कौन लायेगा।"[१] अहंभावना से युक्त चंड पिता के इस मजाक को गंभीरता से सच मानकर राजकुमारी हंसा को अपनी माँ मान लेता है। चंड के हठ और राजपूती अहं के कारण वृद्ध राणा को राजकुमारी हंसा से विवाह करना पडता है। हंसा चंड की माँ बन जाती है फिर भी वह अपने ह्दय से चंड का प्रेम नहीं निकाल सकती। वह चण्ड से निवेदन करती है कि वह उसे प्रेमिका के रूप में अपनाये। मर्यादानिष्ठ और कर्तव्यपरायण चण्ड उसके अनुरोध की उपेक्षा करता है। हंसा के नारी ह्दय को चोट पहुँचती है और प्रतिशोध

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ - ४६

की भावना उसके मन में जाग उठती है। रणमल भी यही चाहता है। वह हंसा के द्वारा चंड और राघव को रास्ते से हटाकर धीरे-धीरे राज्य पर अपना अधिकार बढ़ाना चाहता है। चंड सौतेली माँ से अपनी उपेक्षा का प्रतिशोध लेना चाहता है। चण्ड का छोटा भाई राघव और राजनर्तकी भारमली दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। रणमल भी भारमली के प्रति आसक्त है पर वह उसकी उपेक्षा करती है, इसीकारण वह चंड से उसके भाई राघव की शिकायत करता है। चंड राघव को आदेश देता है कि वह राजधानी से बाहर चला जाये।

राणा लक्ष्यसिंह युद्ध में वीर-गति को प्राप्त होते हैं। उनके पीछे चंड राज्य की देखभाल करता है। अपने षडयन्त्र के नुसार रणमल राघव की हत्या करवाता है। वह हंसा से कहता है कि चंड स्वयं राजा बनना चाहता है और चण्ड को निर्वासित कर देता है। अत्याचारी रणमल मंडोवर पर हमला करके उसे अपने अधिकार में लेता है। हंसा की माँ अपने नन्हें युवराज को रणमल के हाथों में पड़ने से पहले मार डालती है। रणमल हंसा का पुत्र युवराज मोकल को भी मारने का प्रयास करता है। रणमल की इस दुष्ट प्रवृत्ति को देखकर हंसा को अपने कृत्य पर पश्चाताप होता है। वह युवराज चण्ड जो निर्वासित है उसे सहायता के लिए पत्र लिखती है। पत्र मिलते ही चण्ड मेवाड़ आता है और अपने प्रयत्नों से मेवाड़ की रक्षा करता है। इसी बीच भारमली भी राघव की हत्या के प्रतिशोध में रणमल से लढ़ते हुए प्राण त्याग देती है। अपने सौतेले भाई पर सगे भाई से भी ज्यादा प्यार करनेवाली हंसा अंत में रणमल को मरा हुआ देखकर चंड से कहती है "चलो तुम्हारे मार्ग से यह काँटा भी निकल गया।"[१] हंसा की इस मनोवृत्ति को देखकर चण्ड के मन को ठेस पहुँचती है और वह राज्य छोडकर चला जाता है। इस तरह नाटक का अंत अनपेक्षित और प्रभावोत्पादक है।

इस नाटक का नायक चंड नैतिकता,आदर्श और मर्यादा के अहं से ग्रस्त है। उसका यह अहं अंत में राष्ट्रपतन का कारण बनता है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ-१८२

"जय-पराजय" में अश्कजी ने राजपूतों की नैतिकता, आदर्श और मर्यादा की थोथी अहंभावना पर तीखा व्यंग्य किया है। अश्क का यह नाटक ऐतिहासिक नाटकों की परम्परा में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

२.२ स्वर्ग की झलक :-

प्रकाशन क्रम से अश्क का यह दूसरा नाटक है। इसका प्रकाशन सन १९३८ को हुआ है। "जय-पराजय" के बाद लिखा हुआ अश्क का यह पहला सामाजिक नाटक है। इस नाटक में अश्कजी ने प्रेम और विवाह की समस्या का उद्घाटन किया है। नाटक में अश्कजी ने मध्यवर्ग की आधुनिक फैशनपरस्त लड़कियों पर व्यंग्य किया है।

रघु एक पत्रकार है। उसके बड़े भाई और भाभी के आगे यह प्रश्न खड़ा होता है कि उसकी जीवन-संगिनी कैसी होनी चाहिए। रघु की पहली पत्नी विमला का स्वर्गवास हो चुका है। उसके एक कन्या भी है। उसके बड़े भाई गिरधारीलाल गृहकार्य में निपुण, खाना पकानेवाली, सीना-पिरोना जाननेवाली, जान-पहचान की, साधारण शिक्षा प्राप्त लड़की से रघु की शादी करना चाहते हैं। इन सब गुणों से युक्त अर्थात उसकी साली रक्षा से वे रघु की शादी करना चाहते हैं। रघु पढ़े-लिखे समाज में रहता है। उसके साथियों की पत्नीयाँ पढ़ी-लिखी हैं। रघु को सिर्फ खाना पकानेवाली रसोइन था सिना-पिरोना जाननेवाली दरजिन नहीं चाहिए बल्कि उसे अपने मित्रों की पत्नियाँ याने मिसेस राजेन्द्र और मिसेस अशोक जैसी घर को स्वर्ग बनानेवाली पढ़ी-लिखी "अपटुडेट" लड़की चाहिए।

रघु की भाभी ने अपनी शादी के बाद ही घर पर पढ़कर बी.ए.पास किया है, फिर भी वह कालेज के प्रभाव से मुक्त हैं। गिरधारीलाल शिक्षा को बुरा नहीं मानते हैं पर आजकल शिक्षा से आधुनिकता का जो प्रभाव लड़कियों पर पड़ रहा है उससे भयभीत हैं इसलिए वे आधुनिक शिक्षित लड़की रघु के लिए पसन्द नहीं करते। रघु बाहय-प्रसाधनों से युक्त उमा नामक एक उच्चशिक्षित युवती की ओर आकर्षित है। उमा की दृष्टि में पतिव्रत, धर्म, सेवा और त्याग का कुछ भी मूल्य नहीं है। उसकी जिन्दगी का ध्येय केवल निजी स्वार्थों की अभिलाषा की पूर्ति करना है।

रघु अशोक और राजेन्द्र की पत्नियों जैसी उच्चशिक्षित पत्नी चाहता है। उमा में उनकी झलक होने के कारण रघु उसे पसंद करता है पर स्वतंत्र रूप से उसे पूछने का साहस न होने से भाई और भाभी पर इस काम को छोड़ देता है।

संयोग से रघु को अशोक और राजेन्द्र के स्वर्गरूपी संसार की झलक देखने को मिलती है। मि. अशोक ने रघु को खाने पर बुलाया है। रघु के आने से पहले ही उसने खीर और सब्जी पकायी है। वह अपनी पत्नी से उठकर रोटियाँ सेंकने के लिए कहता है तब वह सर दर्द हो रहा है कहकर इन्कार कर देती है। बच्ची को दूध पिलाने के लिए रात में दो बार उसे उठना पड़ा है इसीलिए उसकी तबीयत खराब हो गयी है। नौकर बीमार होने की वजह से आया नहीं है। दोनो में झगड़ा शुरू हो जाता है। मिसेस अशोक अपने पति से दो रसोइए रखने के लिए कहती है। अशोक उस पर चिढ़ता है इतने में रघु आ जाता है। रघु ने अपना चिल्लाना सुना है यह देखकर अशोक अपनी बात बदल देता है। रघु पर यह प्रभाव डालना चाहता है कि अपनी बीमारी में भी पत्नी ने रसोई में काम किया है। शरीर साथ नहीं दे रहा है, फिर भी उसने उठकर खिर पकायी है। रघु को समझाते हुए वह कहता है "बीस बार कहा है कि भाई, तुम आराम करो। समय पर एक घड़ी का आराम बाद को एक वर्ष की मुसीबत से बचाता है पर यह मानती ही नहीं। स्वास्थ इनका खराब है; रात ये सोयी नहीं, पर ज्योंही सुबह मैंने बताया कि तुम्हारा खाना है, तो झट रसोई घर में जा बैठी।"[१] अशोक के इस वक्तव्य से हम ये जानते हैं कि अश्क ने सिर्फ श्रीमती अशोक पर ही व्यंग्य नहीं किया है बल्कि समाज में इसी प्रकार घटित होनेवाली घटनाओं पर व्यंग्य किया है।

रघु को एक दिन प्रोफेसर राजेन्द्र के घर की भी स्वर्ग की झलक देखने को मिलती है। रघु देखता है कि राजेन्द्र पिछले तीन दिनों से अपने बीमार बच्चे को संभाल रहा है। बच्चे की माँ बाढ़-पिड़ितों के प्रति संवेदनशील होकर उनकी सहायता की तैयारी में लगी है। बाहर जाते वक्त वह पति को बच्चे की देखभाल करने के लिए कहती है। रात को उसे देर हो जायेगी इसीलिए वह रात का खाना बाहर ही खायेगी

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क स्वर्ग की झलक पृ - ३७

यह भी बताकर जाती है। राजेन्द्र इस वस्तुस्थिति पर पर्दा डालना नहीं चाहता। वह रघु से कहता है - "इन चमकदार मोतियों का उपयोग कितना है रघु तुम नहीं जानते। तुम इन्हें दूर ही से प्यार की नजरों से देख सकते हो, चाहो तो इन्हें पास बैठाकर सपनों के संसार बसा सकते हो, पर जीवन के खरल में पीस इन्हें किसी काम में ला सकोगे इसकी अशा नहीं।"[१]

रघु की भाभी अपने पति को मनाकर उमा के साथ रघु की सगाई पक्की कर देती है परन्तु अशोक और राजेन्द्र के विषमतापूर्ण जीवन को देखकर रघु का भ्रम टूट जाता है। आखिर वह अपनी साली रक्षा से ही विवाह करने का निश्चय कर लेता है।

इसप्रकार नाटककार शिक्षित एवं आधुनिक नारियों की असंतुलित प्रवृत्तिपर चोट करता है। हमारे सामने यह प्रश्न उठता है कि अगर ये आधुनिकाएँ शिक्षित न होती तो क्या उनका दाम्पत्य जीवन सुखी होता ? इसके उत्तर में हमें ये पता चलता है कि अश्कजी नारी शिक्षा के विरोधी नहीं हैं। अश्क का विरोध शिक्षिताओं की उस मनोवृत्ति से है जो धनी पति चाहती है और बाहर रहकर घर बिगाड़ने में सहायक होती है।

२.३ <u>छठा बेटा</u> :-

प्रकाशन क्रम से यह अश्क का तीसरा नाटक है। इस नाटक का प्रकाशन सन १९४० को हुआ है। यह नाटक मानव के स्वार्थी रिश्तों का हास्य-व्यंग्यमयी चित्रण है। इस नाटक की मूलभूत प्रेरणा नाटककार को जीवन की एक साधारण घटना से प्राप्त हुई थी। जब वे प्रीतनगर से अटारी तक की यात्रा कर रहे थे तब इक्के पर उनके साथ एक मुसलमान महिला और उसकी मौसेरी बहन भी थी। वह महिला अपने बेटों के बारे में उसे कुछ बता रही थी। उस महिला के दो बेटे शादी के बाद उसे छोडकर अलग रहने लगे थे। उन दो बेटों के दुर्व्यवहार के बाद भी वह अपने तीसरे बेटे का

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क स्वर्ग की झलक पृ-५७

घर आबाद हो जाय और उसके मन को सुखशान्ति मिले इसी आशा पर है। इसी घटना से प्रेरणा लेकर अश्क ने नाटक का निर्माण किया है।

पं.बसंतलाल रेल्वे के अवकाश प्राप्त पदाधिकारी हैं। वे शराबी और पुराने विचारों के हैं। उनके छः बेटे हैं जिनमें से चार बेटों की शादियाँ हो चुकी है। पाँचवाँ आई.सी.एस.होनेवाला है और छठा बेटा कही चला गया है। पाँचो बेटे अच्छे पदों पर काम करते हैं पर सबको अपनी-अपनी पडी है। पिता से सभी घृणा करते हैं कोई भी उसे अपने पास रखने के लिए तैयार नहीं है। वह कहाँ रहे यह सबसे बड़ा प्रश्न है। उसकी इस स्थिति के लिए वह स्वयं उत्तरदायी है क्योंकि वह एक अव्वल दर्जे का शराबी है। वह इतना पीता है कि होशोहवास खो बैठकर नाली में पडा रहता है।

बड़ा बेटा हंसराज अपने पिता के उत्तरदायित्व के प्रति मुँह नहीं मोडता है पर पिता की गन्दी आदतों से उसे घृणा है। वह डाक्टर होने से उसके पास बड़े-बड़े लोग आते है और पिता का इसप्रकार बेपरवाह रहना उसे पसंद नही है। दूसरे बेटे गुरूनारायण को पिता का कमीज और तहमत पहनकर बाजार में घूमना अच्छा नहीं लगता है। देवनारायण को शिकायत है कि उसका पिता उसके लम्बे और प्यारे बालों को देखकर जलता है और उसे गीत गाते वक्त हमेशा परेशान करता है। हरिनाथ सात्विक विचारें का है और पिता रोज मूर्गा भूनकर खाता है। कैलाशपति तो अपने पिता के साथ एक पल भी नहीं रह सकता है और छठा बेटा दयालचंद मंचपर आता ही नहीं। बसन्तलाल के स्वप्न में ही उसकी छायाकृति आती है।

अपने प्रति बेटें के अनादर के जिम्मेदार बसन्तलाल खुद ही हैं। एक दिन बसन्तलाल दस रू. लेकर स्वयं बाजार में आटा लाने चला जाता है। क्योंकि गुरूनारायण को जल्दी खाना खाकर विश्वविद्यालय जाना है और घर में आटा नहीं है। घर में बहू राह देख रही है। बसन्तलाल शराब के नशे में धुत होकर लड़खड़ाते हुए घर लौटता है। पाँव का जूता गायब है, कमीज के बटन खुले पड़े हैं और हाथ में आटे के बदले तीन लाख रूपयों का लाटरी का टिकट है। बसन्तलाल की इस बेपरवाही से घरवाले तंग आकर उससे घृणा करते हैं।

इसके आगे की कथावस्तु जीवन के यथार्थता से संबंध रखते हुए भी यर्थाथ का भ्रम है, यथार्थ नहीं। बाद की सारी कथा बसन्तलाल के स्वप्न की घटना बन जाती है। बसन्तलाल को लाटरी के टिकट से तीन लाख रूपये मिल जाते है और यह खबर वे अपने बच्चों को देते हैं, जिससे सारे पुत्रो में हलचल मच जाती हैं। हंसराज की पत्नी कमला याने बसन्तलाल की बहू कहती है कि उसने आटे के लिए दिये गये रूपयों से ही बसन्तलाल ने टिकट खरीदा है इसलिए उन रूपयों पर उसका भी हक है। पैसे एंठने के लिए पाँचो पुत्र पिता के सेवक बन जाते है। हंसराज पिता की चिलम भरकर देता है। अपने लंबे बालों से प्यार करनेवाला देवनारायण सर के बाकी बाल काटकर सिर्फ लंबी चोटी रख लेता है। बाप की गालियाँ सुनकर भी बेटे उसकी टाँगे दबाते हैं। अपने हाथ से उन्हें शराब पिलाते हैं। इसीप्रकार खुशामद करके पिता का सारा पैसा पाँचों बेटे मिलकर ऐंठ लेते हैं। पैसा लेकर भी बाद में बसन्तलाल को साथ रखने में सभी इन्कार कर देते हैं। इसप्रकार बसन्तलाल अपने पाँचों पुत्रों से निराश होता है।

अंत में सपने में ही उनका छठा बेटा आकर उन्हें सेवा करने का आश्वासन देता है। बसन्तलाल की पत्नी की कल्पना में भी छठे बेटे दयालचन्द की मुर्ति आती है और दयालचन्द उससे वादा करता है कि वह उनकी सेवा करेगा। जब प.बसन्तलाल सोकर उठते हुए कहते हैं - "मेरा छठा बेटा"[१] और धरती से लाटरी का टिकट उठाकर देखते हैं और यह चिल्लाते हुए कि "तो क्या यह केवल सपना था"[२] चारपाई पर गिर जाते हैं तब हमें यह मालूम हो जाता है कि लाटरी का टिकट लगना, पाँचों बेटों का बाप की सेवा करके उसका पैसा लेकर उसेही संभालने से इन्कार कर देना और अन्त में छठे बेटे का आ जाना यह सबकुछ बसन्तलाल के मन की दबी हुई इच्छा है जो स्वप्न में साकार हो गयी है। यथार्थता के इस भ्रम को इसतरह नाटक में प्रस्तुत किया गया है कि स्वप्न का भ्रम भी यथार्थ बन गया है।

नाटककार ने वर्तमान समाज और सभ्यता पर तीखा व्यंग्य किया है। आज की ऐसी पारिवारिक स्थिति का चित्रण किया है, जिसमें सारे रिश्ते-नाते केवल पैसों के बलपर अवलम्बित हैं।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क छठा बेटा पृ-१०८

२. - वही - पृ-१०८

२.४ <u>कैद</u> :-

प्रकाशन क्रम से अश्कजी का यह चौथा नाटक है। इसका प्रकाशन सन १९५० को हुआ है। "कैद" में नाटककार ने मध्यवर्गीय जीवन के बंधनों में जकड़ी हुई, विवश नारी को लेकर नारी जीवन की समस्या को प्रस्तुत किया है।

इस नाटक की नायिका अप्पी याने अपराजिता विवाह के पहले हवा सी उड़नेवाली, हँसती-खिलती लड़की थी। अप्पी को अपनी मौसी के देवर दिलीप से प्रेम था। अप्पी की माँ दिलीप के साथ उसका विवाह करना चाहती थी मगर अप्पी के मौसा यह स्वीकार नहीं कर सके। वे दिलीप जैसे निखट्टू के साथ, जो चार पैसे कमा नहीं सकता था, अप्पी का विवाह नहीं करना चाहते थे।

दिप्पो प्राणनाथ की पहली पत्नी और अप्पी की बड़ी बहन थी। उसकी मृत्यु के बाद सामाजिक बंधनों को मानते हुए बिना विरोध किये अप्पी प्राणनाथ के साथ शादी कर लेती है। मन ही मन में दिलीप से प्रेम करनेवाली अप्पी अखनूर की प्राकृतिक सुन्दरता में भी मन की घुटन के कारण सिसकती रहती है।

प्राणनाथ के साथ अखनूर में पिछले आठ वर्ष से "अपनी आत्मा की मंजिल और अपने सपनों के देवता से दूर, पारिवारिक बन्धनों और सामाजिक रूढियों में आबध्द, वह चट्टानों पर सर पटकती हुई, पछाड़े खाती हुई जलधारा की तरह टूट टूटकर बिखर रही है।"[१] पेट-दर्द, कमर-दर्द, सिर-दर्द कोई न कोई दर्द उसे लगा ही रहता है। उसके रोग का कोई उपचार प्राणनाथ के पास नहीं है।

अप्पी को निम्मो और दिशी नामक दो छोटे बच्चे भी हैं मगर वह हमेशा उनपर चिल्लाती हुई नजर आती है। उसे ऐसा महसूस होता है कि वह लम्बी यात्रा तय करके आयी है और थक गयी है। उसने शादी से पहले एक फिल्म देखी थी जिसका नाम था "किंगकाँग"। उस फिल्म को वह भूल नहीं सकी है। उसमें किंग-काँग एक

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क कैद पृ - १५

सुन्दर लड़की को उठा ले गया था। अप्पी की छत पर भी एक वैसा ही दिलेर किंग-कॉंग बंदर आता है, जो कभी चादर तो कभी मिठाई का दोना उठाकर ले जाता है। अप्पी को लगता है उसके अपने जीवन में भी यही घटित हुआ है। एक दिलेर किंग-कॉंग सबके सामने उसे उठाकर अपने घर लाया है। "किंग-कॉंग" फिल्म की सुन्दर युवती को तो बन्दर ने छोड़ भी दिया था, लेकिन अप्पी तो आज भी कैद है।

अप्पी अपने अतीत में ही खोयी हुई गुमसुम रहती है। प्राणनाथ उसे हृदय से चाहते हैं पर अप्पी के अस्वस्थ रहने से वे मन ही मन में खुद को अपराधी मानते हैं। विवाह के इन आठ सालों में वे अप्पी को सुखता हुआ देख रहे हैं। दोनों भी अपने संसार में सुखी नहीं हैं। अप्पी और प्राणनाथ के इन अस्वस्थ सम्बन्धों के कारण पारिवारिक विकास में बच्चों को मातृस्नेह नहीं मिल पाता है। अप्पी अपना सारा क्रोध बच्चों पर उतारती रहती है। इसतरह के विषम जीवन में जब उसे अपने पूर्व प्रेमी दिलीप के आने की खबर मिलती है तो उसका रंग चमक उठता है, उसमें एक बिजली-सी दौड उठती है। बिस्तरपर लेटनेवाली अस्वस्थ अप्पी की देह पर नजर आनेवाला पीलापन अचानक गायब हो जाता है। उत्साह से वह घर की सफाई करती है। बच्चों को साफ-सुथरा करती है। घर में गुलदस्ते लगाये जाते हैं। हमेशा बच्चों पर चिखनेवाली अप्पी को दिलीप के आने से बच्चों पर स्नेह उभर आता है। बरसों के बाद वह दिलीप की खातिर खाना पकाने के लिए रसोईघर में जाती है। दिलीप के आने से कुछ समय के लिए अप्पी बदल जाती है। दोनों मिलकर पुरानी यादों को उजागर करते हैं पर यह क्षणिक संयोग होता है। दिलीप के साथी आकर उसे फिर वापस ले जाते हैं और सामाजिक शिकंजों में अटकी हुई अप्पी फिर अपनी किस्मत पर रोने के सिवा कुछ नहीं कर सकती।

इस नाटक की अप्पी अपने जीवन के साथ समझौता करने की चेष्टा तो करती है पर वह जीवन में सुखी नहीं हो पाती। नाटककार को केवल अप्पी की कुंठा को, उसकी विवशता तथा पीड़ा को ही दिखाना नहीं है तो समाज की उस कुरीति की ओर भी संकेत करना है जो व्यक्ति के संबंधों का संतुलन कायम नहीं होने देती और स्वस्थ मानवीय प्रेम को पनपने नहीं देती है।

२.५ उड़ान :-

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से अश्क का यह चौथा नाटक है। इसका प्रकाशन सन १९५० को हुआ है। "उड़ान" में अश्क ने नारी के सामाजिक सम्बन्धों को मान्यता दी है। माया के रूप में एक ऐसी बुध्दिवादी नारी की अवतारणा की है, जो अपने व्यक्तित्व के प्रति पूर्णतः सचेत है। वह समाज की रूढ़ियों और परंपराओं से जुझने का साहस रखती है।

शंकर,रमेश ओर मदन के द्वारा पुरूषों की तीन अलग-अलग प्रवृत्तियाँ नजर आती हैं। मदन युद्ध से त्रस्त रंगून से भागकर स्वदेश के लिए जानेवाली टोली का सदस्य है। उसमें एक बात थी कि वह किसी की सहायता करने के बदले, उसके स्नेह का अनुचित लाभ उठाता। माया ने एक रोज उसे डाँटा और आश्चर्य की बात हुई कि मदन शर्मिन्दा हो गया और उस दिन से उसकी जिन्दगी बदल गयी। यदि वह न होता तो काफिले के सारे लोग जिंदा नहीं रह सकते थे। मदन ने सारे काफिले के लोगों को बचा लिया पर स्वयं एक रोगी को साथ लेकर आते समय नाहूँग नदी की लहरों में बह गया। इस घटना के बाद माया भटकती रहती है। अपने प्रिय साथी मदन से बिछडकर वह जंगलों, पहाड़ों और नदी-नालों को पार करती हुई बीमार पड़ जाती है और शंकर के डेरे में उसे पनाह लेनी पडती है।

शंकर एक शिकारी है और उसका साथी रमेश एक कवि है। शंकर नारी को पशु-पक्षी की तरह अपना शिकार समझता है। उसकी दृष्टि में नारी केवल वासनापूर्ति का साधन मात्र है। यह उसके जीवन की मूल प्रवृत्ति है। वह छल से माया को पाने का प्रयत्न करता है किन्तु जब उसे मालूम होता है कि उसकी पाशविक वृत्ति को जानकर उसका विरोध करते हुए माया उससे दूर जा रही है तो वह उस पर पर्दा डालने का प्रयत्न करता है। "तुम क्या कहती हो, माया! मैं तुम्हारा शिकार नहीं करना चाहता, मैं तो स्वयं शिकार हो जाना चाहता हूँ। "[१] वह एक शिकारी है और शिकार करते समय भावनाओं की चिन्ता करना नहीं जानता है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क उड़ान पृ- १३२-३३

रमेश एक भावुक प्रकृति का कवि है। वह अपने शिकारी मित्र के साथ जंगल में पहुँच गया है। वह नारी के सौंदर्य की पूजा करता है, उसे देवी मानता है। माया को वह श्रद्धा और भक्ति की दृष्टि से देखता है। उसे माया इस दुनिया की लगती नहीं है। शंकर के मतानुसार रमेश माया से प्रेम करता है पर रमेश उसे कहता है - "प्रेम ! वह प्रेम की चीज नहीं शंकर, पूजा की चीज है।"[१] वह पुजारी बनकर प्रतिक्षण माया की पूजा करना चाहता है।

इसी बीच बीमार माया स्वस्थ हो जाती है। एक दिन अचानक मदन माया को खोजता हुआ शंकर के कैम्प के निकट आता है। माया को प्रसन्न देखकर मदन उसपर सन्देह करता है। शंकर और मदन ने तुम्हें मरते हुए बचाया है, जीवन दिया है इसतरह का संदेह करते हुए वह माया के साथ चलने से इन्कार करता है। माया मदन से प्रेम करती है। वह मदन का सन्देह दूर करने का प्रयत्न करती है "मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ, अपनी सारी भलाई के बावजूद रमेश मेरे लिए कभी वह नहीं रहा जो तुम रहे। तुम्हारी प्रतीक्षा में, शंकर की अशिष्टता से बचने के लिए मैं रमेश का आश्रय लेती रही, लेकिन तुम......तुम्हारी आँखों पर छाये धुँधलके, सत्य के प्रकाश को देखना नहीं चाहते।"[२] शंकर और रमेश से छिपकर वह मदन के साथ चली जाना चाहती है किन्तु मदन यथार्थ को समझने की कोशिश नहीं करता है। माया मदन की ईर्ष्या और स्वार्थपरता को देखकर दुःखी होती है। माया उसकी कमजोरी पर व्यंग्य करती है और कहती है, "मुझे खेद है, मैंने तुम्हें समझने में भूल की।"[३]

माया न असहाय बनती है, न परिस्थिति पर आँसू गिराती है। वह स्पष्ट शब्दों में कह देती है "वह असहाय अबला स्त्री मैं नहीं, जिसे मदन चाहता है और जो हर समय पुरूष के सहारे की आशा बाँधे, दासी की तरह खड़ी रहती है। वह बीमार हिरनी भी मैं नहीं, जिसे तुम लोग गोद में भरकर मनमानी करना चाहते हो।"[४]

उसके विचार से नारी न तो श्रद्धा और पूजा की वस्तु है, न वासनातृप्ति का साधनमात्र है और न वह किसी पुरूष की सम्पत्ति है। वह पुरूष की जीवन-संगिनी

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क उड़ान पृ- ११८
२. - वही - पृ - १४६
३. - वही - पृ- १४७-४८
४. - वही - पृ- १५२

है और पुरूष को भी इसी रूप में स्वीकार करना चाहती है। जिस मदन के अभाव में वह अपना जीवन व्यर्थ समझती थी, उसे छोड़ने में भी वह संकोच नहीं करती है। अकेली ही वहाँ से निकल जाती है।

अश्कजी का यह नाटक नारी को पुरूष की रूढ़दासता से मुक्ति की ओर उन्मुख होने का संदेश देता है।

२.६ पैंतरे :-

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से अश्क का यह पाँचवाँ नाटक है। इसका प्रकाशन सन १९५३ को हुआ है। अश्कजी का यह हास्य-व्यंग्यप्रधान नाटक है। इसमें बम्बई के फिल्मी क्षेत्र में काम करनेवाले लोगों के जीवन की झाँकी प्रस्तुत की है। लेखक की नाटक लिखने की प्रेरणा 'मकान की समस्या' को भी यहाँ उठाया है। फिल्मी जीवन में छल-कपट किस प्रकार चलता है यह दिखाने का प्रयास लेखक ने किया है।

रशीद भाई सामाजिक फिल्म में काम पाने के लालच से डायरेक्टर कादिर को सपत्निक अपने घर पर चाय पीने के लिए बुलाते हैं। चाय के साथ-साथ बड़ी सफाई से डायरेक्टर कादिर की खुशामद करते हुए उनके फिल्मों की तारीफ के पुल भी बाँधते हैं। बेगम कादिर को रशीदभाई का फ्लैट पसन्द आता है और वह अपनी दिक्कत का जिक्र करती है। रशीदभाई सौजन्यता दिखाकर उन्हें अपने फ्लैट पर रहने की दावत देते हैं। जाते समय बेगम कादिर अपने पति की नयी सोशल फिल्म के संवाद लिखवाने का उन्हें आश्वासन देती है। रशीदभाई को अपनी इस सफलता पर खूब आनंद होता है। उन्हें लगता है डायरेक्टर कादिर अपना बंगला छोड़कर यहाँ नहीं आयेंगे और अपना फ्लैट उन्हें पेशकर मैंने अपना काम बनवा लिया है।

खुशी में वे अपने मित्र शाहबाज के पास जाते हैं और दादर बार में जाकर पेग उठाते हैं। रशीदभाई अपनी सफलता की कहानी शाहबाज को बड़ी शान से सुनाते हैं और शाहबाज भी सोशल-फिल्म में रोल पाने के लिए रशीदभाई की मस्केबाजी करता हैं। वह रशीद के साथ मधुपान करता है और फिल्म में काम पाने का आश्वासन लेकर उसे पुनः सात दिन बाद उसी बार में आमन्त्रित करता है।

सात दिनों के बाद जब रशीदभाई शाहबाज के बुलाने पर जाता है तो बड़ा उदास दिखाई देता है और शाहबाज के बार-बार पूछने पर वह बता देता है कि किस तरह बेगम कादिर और डायरेक्टर कादिर ने उसके फ्लैट पर कब्जा कर लिया है। वह अपने ही घर में बेघर हो जाता है। रशीद और उसकी पत्नी केवल एकही कमरे में रहते हैं। डायरेक्टर कादिर के बीमार होने से न वे दोनों हँस सकते है और न बोल सकते हैं। इतनाही नहीं बेगम कादिर ने उनके स्टोररूम, बाथरूम और नौकरानी पर भी अधिकार जमा लिया है। डायरेक्टर कादिर के इसतरह फ्लैट पर हक जमाने से रशीद को लगता है उसे यह कह दे कि उसे सोशल फिल्म नहीं चाहिए, वह स्टंट फिल्मों का लेखक ही अच्छा है। शाहबाज भी अपना काम बिगड़ जायेगा यह सोचकर रशीद-भाई को समझाता है कि वह चिन्ता न करे। उन्हें अगर कष्ट हो रहा है तो वे बीवी के साथ उसके सिंगल फलैट में चले आये। वह साथ है तो शाहबाज बाहर सीढ़ियों पर भी सो सकता है। जिस पैंतरेबाजी के चक्कर में आकर रशीद ने अपना मकान छोड़ा था उसीप्रकार शाहबाज भी अपने मकान में रशीद को आमंत्रित करता है। रशीदभाई अपना बोरिया-बिस्तर उठाकर अपनी बेगम के साथ शाहबाज के सिंगल फ्लैट में आ ही जाते हैं।

रात के समय शाहबाज अपने फ्लैट के बाहर सीढ़ियों के पास जमीन पर अपना बिस्तर लगाये पड़े हैं। रशीदभाई कमरे से झाँककर हमदर्दी दिखाते हैं। शाहबाज का नौकर छोकरा उसे अचानक इस तरह बाहर बिस्तर लगाये देखकर बाहर सोने का कारण पूछता है तब शाहबाज उसे कहता है "अरे भाई! एक फिल्म में हमें नौकर का पार्ट करना है। कुछ दिन तुम्हारे पास सीढ़ी पर सोकर देखें कि तुम लोगोंपर कैसी गुजरती है। तभी तो अच्छा पार्ट कर पायेंगे।"[१] इसतरह फिल्मों में काम मिलने के लालच में रशीदभाई अपना फ्लैट डायरेक्टर कादिर को देते हैं और शाहबाज अपना फ्लैट रशीदभाई के लिए देता है। नाटक का हर पात्र पैंतरेबाजी के लिए परिस्थितिवश मजबूर है।

मकान की इस समस्या और उसके हास्यापद पहलू के पर्दे में अश्क ने बड़ी कुशलता से फिल्मी जीवन के झूठ, खुशामद और मस्केबाजी, स्वार्थ और यथार्थता को दिखाया है। इसप्रकार यह नाटक हास्य और यथार्थवादी व्यंग्य से ओत-प्रोत है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क पैंतरे पृ- १३६

२.७ <u>अलग-अलग रास्ते</u> :-

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से अश्क का यह छठा नाटक है। इसका प्रकाशन सन १९५४ को हुआ है। यह एक समस्या नाटक है। इसमें वर्तमान समाज की एक जीवंत समस्या को लेखक ने प्रस्तुत किया है। इस नाटक में असफल दाम्पत्य जीवन को लेकर विवाह संस्था की त्रुटियों को अश्क ने उजागर किया है। इसमें उन्होंने नारी-जीवन के नव-जागरण का यथार्थरूप प्रस्तुत कर उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा की ओर ध्यान आकृष्ट किया है।

पं.ताराचन्द ने राज और रानी नामक अपनी दो बेटियों की शादी कर दी है। ताराचन्द पुराने संस्कारें का पुरूष पात्र है। उसने अपनी बड़ी बेटी रानी का विवाह पं.कुंजबिहारी के बेटे त्रिलोक के साथ कर दिया है। उन्होंने यह नहीं सोचा कि लड़का अपने बेटी के योग्य है या नही, उनके विचार एक-दूसरे से मिलेंगे भी या नहीं बल्कि घर इज्जतदार है, परिवार बड़ा है, यह देखकर ही लड़की की शादी वहाँ करा दी। रायबहादूर कुंजबिहारी की कई कोठियाँ हैं, यह तो ताराचन्द ने सुना था पर उसमें से कितनी कोठियाँ गिरवी पडी हैं, उनकी आर्थिक दशा बुरी है, वे कर्ज में डूबे हुए हैं यह उसे मालूम नहीं था। अपनी इस गिरी दशा पर भी झूठी शान में कुंजबिहारी दहेज न लेने का नाटक कर इन्कार कर देते हैं। जब रानी ससुराल पहुँचती है तो स्वयं पति त्रिलोक और उसके परिवारवाले दहेज न लाने की वजह से कंजुस बाप की बेटी कहते हुए उसे ताने पर ताने देने लगते हैं। त्रिलोक को मोटार और मकान न मिलने की वजह से वह रानी को अपमानित करता रहता है परंतु रानी अत्याचारें को न सहनेवाली और उन बन्धनों को जो जान-बुझकर तकलीफ देते हैं, न माननेवाली लड़की है। वह अन्याय न सहते हुए पति के घर को छोड़कर अपने पिता ताराचन्द के घर आ जाती है।

पहली बेटी की शादी के मामले में धोखा खाने के कारण पं.ताराचन्द अपनी दूसरी बेटी रानी का विवाह पं.उदयशंकर जैसे गरीब पिता के पुत्र मदन के साथ कराते हैं। मदन कालेज में प्रोफेसर है। शादी के बारे में ताराचन्द मदन का मनोभाव जानने की आवश्यकता नहीं समझते। ताराचन्द को यह खबर मिल जाती है कि मदन अपनी

जाति से बाहर किसी लड़की से विवाह करना चाहता है पर ताराचन्द इस बात पर विश्वास नहीं रख पाता। हिंदू समाज के रूढ़िवादी रीतिरिवाजों के अनुसार अपनी दोनों बेटियों की शादी उनकी राय लिये बिना ही तय कर देता है।

प्रोफेसर मदन अपनी प्रेमिका सुदर्शना से विवाह करना चाहता था पर अपनी साहस-हीनता के कारण पिता के कहने के अनुसार वह राजो के साथ विवाह कर लेता है। वह जानता था की राजो से ब्याह करना उसके लिए आत्महत्या के बराबर है। उसने निश्चय किया था कि वह अपने भावों का गला घोट देगा और सुदर्शना के प्रेम की स्मृतियों पर जीयेगा परंतु वह अपने अतीत को नहीं भूला सका। वह राजो से कहता है - "तुम उस मनुष्य की कल्पना करो, जो आत्महत्या करने के प्रयास में पंगु हो जाय।"[१] मदन पढ़ा लिखा होकर भी सामाजिक बंधनों से घबराकर अपने साथ-साथ दो अन्य व्यक्तियों का जीवन भी बर्बाद कर देता है। राज एक ऐसी लड़की है कि जो जानती है कि पति उससे प्यार नहीं करता है, तब भी वह पति के चरणों में ही अपना जीवन बिताना चाहती है। राजो नारी के उन पुराने संस्कारों का प्रतीक है, जो शील और मर्यादा को लेकर पतिव्रता बनना चाहती है। बन्धनों और अत्याचारों को सहना साधना समझती है।

मदन अपनी पत्नी राज के अधिकारों की उपेक्षा कर अपनी पूर्व प्रेमिका सुदर्शना से दूसरा विवाह कर लेता है। मदन राज से कहता है - "तुम्हारे अधिकार की नींव एक सामाजिक प्रथा पर टिकी है। हृदय से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। सुदर्शन का अधिकार मेरे हृदय से सम्बन्ध रखता है।"[२]

रानी और राज दोनों भी अपनी-अपनी विचित्र स्थिति के कारण अपने पिता के घर आ जाती हैं पर दोनों में भेद दिखाई देता है। रानी उस पर हुए अत्याचारों के कारण फिर से अपने ससुराल जाना नहीं चाहती। उसका पति त्रिलोक ताराचन्द ने मध्यस्थ लोगों से मकान और मोटार के दिये हुए आश्वासन के कारण रानी को लेने आ जाता है। रानी उसके साथ जाने के लिए इन्कार कर देती है। पं.ताराचन्द पति और धर्म के नामपर

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क   अलग-अलग रास्ते   पृ-७८

२. - वही -   पृ-७८

उसे कुछ समझाना चाहते है पर वह पं.ताराचन्द से कहती है - "आप के धर्म की बातें मैंने बहुत सुन लीं पिताजी, आप का धर्म भी पुरूषों का धर्म है।"[१]

इसके विपरीत राज अपने पति मदन के दूसरी शादी करने के बावजूद भी अपने देवता समान ससुर के यहाँ चली जाना चाहती है, वह उसे अपनी किस्मत ही मानती है।

पं.ताराचन्द का बेटा पूरन भी अपनी बड़ी बहन रानी के विचारों से सहमत है। वह अपने पिता के विरोध में बोलता है। रानी अपना स्वाभिमान और सामाजिक व्यक्तित्व पाने के लिए पति को भी छोडती है और पिता के घर को भी छोडकर चली जाती है।

नाटककार ने नारी के दो रूप दिखाये हैं। एक पुराने संस्कारों को हद से ज्यादा माननेवाली और दूसरी उन सामाजिक बंधनों को तोड़कर अपना नया अस्तित्व नीर्माण करनेवाली जो उसके पथ में बाधा डालते हैं।

इस नाटक में विवाह की समस्या को लेकर अश्क ने आज के समाज में पग-पग पर घटित होनेवाली विवाह समस्याओं को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

२.८ <u>अंजोदीदी</u> :-

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से अश्क का यह सातवाँ नाटक है। इसका प्रकाशन सन.१९५५ को हुआ है। यह एक मनोवैज्ञानिक नाटक है। लेखक ने अभिज्यात परिवार की समस्या को इस नाटक में प्रस्तुत किया है। इस नाटक में अंजो के विचारों का प्रभाव आदि से अंत तक छाया हुआ दिखाई देता है। बचपन में ही नाना के गोद लेने की वजह उनके विचार अंजो पर इस प्रकार हावी हो गये हैं कि उन्हीं विचारों को अपने परिवार पर जबरदस्ती लादना चाहती है। सभी दृष्टियों से संपन्न होते हुए भी परिवार के लोग

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अलग-अलग रास्ते पृ-१२४

अंजो के लादे हुए नियमों की वजह से अपनी जिन्दगी जी नहीं पा रहे हैं। अंजो अपने अहं से हटती नहीं है। वह घर को अपनी मर्जी के अनुसार चलाना चाहती है। ठीक आठ बजे सुबह का नाश्ता और रात नौ बजे रात का भोजन, इसमें थोडासा भी परिवर्तन अंजो को बिल्कुल पसंद नहीं हैं। वह केवल अपने पति और बेटे नीरज पर ही अपनी पाबन्दी नहीं लगाती है बल्कि घर के नौकर भी समय पर उठते हैं, समय पर सोते हैं। वह जीवन को एक घडी की तरह चलाना चाहती है। उसके विचार नाना की विरासत हैं। वह कहती है "हमारे नानाजी कहा करते थे, समय-निष्ठा सभ्यता की पहली निशानी है।"[१]

अंजो को अपने विचार दूसरों पर लादने की मनोवृत्ति नानाजी के संस्कार के रूप में मिली है। विवाह के पूर्व स्वच्छन्द जीवन जीनेवाले अंजो के पति अब अंजो की मर्जी के अनुसार अपने सब काम करते हैं। अपने ग्यारह वर्ष के बेटे नीरज पर भी अंजो ने अपने विचारों का इतना गहरा प्रभाव डाला है कि उसे क्या बनना है यह भी अंजो ने ही तय किया है। अगर बच्चों पर विचार लादे गये तो वे स्वाभाविक रूप से विकसित नहीं होते यह अंजो नहीं जानती है। नीरज खुद क्रिकेट का कप्तान बनना चाहता है पर अंजो उसे डिप्टी कमिश्नर बनाना चाहती है इसलिए नीरज से रोज वह छः घंटे पढ़ाई करवाती है। उसके पढ़ने का, खेलने का समय भी अंजो ने तय कर रखा है।

अंजो का भाई श्रीपत सैलानी तबीयत का आदमी है। एक दिन बहुत बरसों बाद वह अंजो के घर आ जाता है। किसी भी बात का वह पाबन्द नहीं है। धूल और पसीने से लतपत वह आतेही जब जीजाजी के गले लग जाता है, तो अंजो उसपर चिढ़ती है और उसे नहाने के लिए कहती है। अंजो को श्रीपत की आदतें बिल्कुल पसंद नहीं हैं। श्रीपत देखता है कि अंजो की सनक ने इन्द्रनारायण का जीवन तो सोख लिया है, बेटे नीरज को भी वह अपनी सनक का शिकार बना रही है। उनकी जिन्दगी

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अंजोदीदी पृ-५५

पर अंजो के रूप में नानाजी की वक्त की पाबन्दी, नियमबध्दता और सफाई हावी है। श्रीपत इसका विरोध करता है। अंजो की सहेली अनीमा जो उसके घर में आयी हुई है, वह भी अंजो की वक्त की पाबन्दी से परिचित है। श्रीपत अंजो को बदलना चाहता है। वह नीरज को पढ़ाई के बदले क्रिकेट की प्रॅक्टीस करने के लिए कहता है। अंजो के पति इन्दर कचहरी में रोज चोरी-चोरी शराब पीते हैं पर अंजो को यह मालूम नहीं है यह जानकर श्रीपत उन्हें दिलकुशा भी ले जाता है। थोडे दिन बाद वह अंजो के यहाँ से चला जाता है।

जब अंजो को पति के शराब पीने के बारे में मालूम पड जाता है तो उसके अहं को ठेस पहुँचती है। उसे अपने हारने का आभास हो जाता है तो वह खुद के आत्मविनाश से अपने उद्देश्य को पूरा करना चाहती है, जिसे जीवित रहकर, वह न कर सकती थी। अपने अहं के कारण वह आत्महत्या तो कर लेती है पर मरते वक्त अपनी सहेली अन्नो से कह जाती है कि "घोषणा कर देना कि फिट ही में अंजो की जान निकल गयी और अपने जीजाजी को शर्म दिलाना कि देखिए आपकी शराबनोशी का क्या दुष्परिणाम निकला.....।"[१] इसतरह अपने अहं की रक्षा की खातिर वह अपनी जिन्दगी भी गवाँ देती है।

बीस वर्षों बाद श्रीपत फिर अंजो के घर आ जाता है तो देखता है कि अंजो ने मरने से पहले नीरज की शादी ऐसी लड़की से की है जो उसकी अपनीही अनुकृति और प्रतिछाया है। नीरज की पत्नी ओमी अंजो के आदर्शों का पालन करना अपना धर्म समझती है। उसे दुःख है कि उसका पति अंजो की इच्छाओं के अनुरूप न हो सका, लेकिन उसे विश्वास है कि अपने बेटे निलम को वह उसकी इच्छाओं के अनुरूप बना देगी।

अंजो के पति इन्द्रनारायण अंजो अपनी वजह से इस दुनिया से चली गयी ऐसा समझकर अपने आपको अपराधी मानते हैं। वे शराब पीना छोड देते हैं। जब अन्नो के कहने पर श्रीपत को और उन्हें यह पता चलता है कि अंजो फिट से नहीं गयी है

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अंजोदीदी पृ-१४७-४८

बल्कि उसने आत्महत्या की हैं तो श्रीपत कहता है "फिट उसको आपकी शराबनोशी पर न आता तो किसी और बात पर आता। वह कमजोर नसों की मॉर्बिड स्त्री थी....।"[१]

श्रीपत अंजो की सनक तथा उसके जुल्म को तोड़कर घर के प्रत्येक इन्सान को अपनी-अपनी जिन्दगी जीना सीखा देता है। इन्द्रनारायण भी अंजो के चित्र के सामने खड़े होकर अंजो से शिकायत करते हुए कहते हैं "जरा-सी गलती पर अपनी सनक में तुमने मेरे पाँच बरस रेगिस्तान बना डाले अंजो, मैं तुम्हें क्या कहूँ। इस कमरे पर बरसों से तुम्हारा जादू तारी है, पर श्रीपत ठीक कहता है यह जादू टूटना चाहिए, इस घर को उस घडी की तरह नहीं, इन्सानों की तरह जीना चाहिए।"[२]

वे स्वयं शराब पीकर अंजो की आत्मा को कष्ट पहुँचाना नहीं चाहते पर श्रीपत,नीरज और उसके मित्र से कहते हैं "तुम पीओ, मौज करो, इस कमरे का जादू तोड़ो। हँसो, शोर मचाओ जीओ!"[३] इस तरह अंत में अंजो की सनक का प्रभाव उस घर से दूर हो जाता है।

नाटककार का उद्देश्य अति का विरोध कर संतुलित जीवन का मार्ग प्रशस्त कराना है।

२.९ भँवर :-

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से अश्क का यह आठवाँ नाटक है। इसका प्रकाशन सन १९६१ को हुआ है। भँवर एक मनोवैज्ञानिक नाटक है। हिन्दी में नाटककार अश्क अपने चुटीले-तीखे व्यंग्य और उन्मुक्त हास्य के लिए प्रसिद्ध हैं किन्तु भँवर के द्वारा अश्क हमारे सामने एक विचारक और समाजशास्त्री के रूप में आते हैं। लेखक को भँवर लिखने की प्रेरणा जीवन की यथार्थता से मिली है। दिल्ली में लेखक ने ऐसी तीन लड़कियों को देखा जो अभिजात वर्ग की और पढ़ी-लिखी थीं। उन तीन लड़कियों की व्यग्रता और

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अंजोदीदी पृ- १६७

२. - वही - पृ- १७१

३. - वही - पृ- १७२

उलझनें उन्हें लगभग एक ही सी लगीं। उन तीनों के वास्तविक जीवन को लेखक ने भँवर की नायिका प्रतिभा में डालने की कोशिश की है।

प्रतिभा एक सुशिक्षित युवती है। उसे जीवन की सभी सुख-सुविधाएँ प्राप्त हैं। धन, शिक्षा और सौंदर्य से युक्त तथा प्रशंसकों से घिरी रहने पर भी वह जीवन से ऊबी हुई है। जीवन के रंगिनियों में उसकी दिलचस्पी नहीं है। अपने आस-पास उसे सब कुछ घटिया नजर आता है। उसके इस असंतोष का कारण प्रथम प्रेम की असफलता है। प्रतिभा ने एम.ए. में पढ़ते वक्त प्रोफेसर नीलाभ से अपना प्रेम प्रकट किया था पर वे उसे स्वीकार नहीं करते हैं। प्रोफेसर नीलाभ ने अपने अध्यापक जीवन के प्रारंभ में अपनी एक छात्रा से विवाह कर लिया था दाम्पत्य जीवन के कटु अनुभवों से उनके जीवन में ऐसा मोड आ गया कि उनके मन में जीवन के प्रति विरक्ति की भावना पैदा हो गयी और अपना शेष जीवन उन्होंने अध्ययन-अध्यापन के लिए समर्पित कर दिया।

प्रोफेसर नीलाभ के प्रेम में असफल प्रतिभा अपने सहपाठी सुरेश से विवाह कर लेती है जो उससे प्रेम करता था किन्तु बौध्दिक असमानता के कारण छः महीनों में ही दोनों एक-दूसरे से ऊबकर अलग हो जाते हैं। सुरेश एक अन्य सहपाठिनी से विवाह कर लेता है। प्रतिभा अपनी माँ के घर चली आती है। वह फिर से विवाह नहीं करती है।

उसके जीवन में निराशा, असफलता और अकेलापन बढ़ताही जाता है। सन्वेदनाशून्यता के साथ अँगडाई लेते हुए वह कहती है "ओह.....ओ! कितना बड़ा शून्य है यह जीवन!! कही भी तो कोई ऐसी चीज नहीं जो ठोस हो, जिसका सहारा लिया जा सके!"[१] उसे अपने पापा का दफ्तर और फाइलों में उलझे रहना, अपनी मम्मी का लंच और डिनर की चिन्ता करते रहना और छोटी बहन का श्रृंगार प्रसाधनों में निमग्न रहना पसंद नहीं है। वह अपनी कमजोरी को स्वीकार भी करती है। उसके दिमाग में आजाद कल्चर्ड जिन्दगी का ऐसा सुन्दर और सजीव चित्र अंकित है कि शादी करके वह उसे फिर नष्ट नहीं करना चाहती। सपनों की दुनिया में ही अपना सारा जीवन

१. उपेंद्रनाथ अश्क भँवर पृ- ५३

बीता देना चाहती है। इस समाज में रहकर ऐसा करना संभव नहीं इसलिए वह सबसे मिलती-जुलती भी है। जीवन से उसे कोई दिलचस्पी नहीं है। दावतों को वह आत्मप्रदर्शन का बहाना और सौंदर्य के कृत्रिम प्रसाधनों को आत्मप्रवंचना का एक रूप मानती है।

प्रतिभा अपने आप को महान, बुद्धिमान मानती है। उच्च शिक्षा और शारीरिक सौंदर्य के कारण उसमें अहं भी है। अपने असामान्य जीवन से वह अच्छी तरह परिचित है इसीलिए बार-बार सामान्य जीवन अपनाने का प्रयास करती है परंतु सफल नहीं हो पाती। प्रो.नीलाभ बुध्दिमान व्यक्ति हैं। प्रतिभा ने उनके व्यक्तित्व का आत्मीकरण करते हुए अपने व्यक्तित्व में भी बौध्दिकता का आरोपण किया है।

अपनी कुंठा के कारण किसी भी नये पुरूष की चर्चा सुनते ही उससे मिलने के लिए उत्सुक हो उठती है और कभी-कभी अपनी प्रकृति से भिन्न पुरूष में भी रूचि लेने लगती है। अपनीही छोटी बहन प्रतिमा का तथाकथित प्रेमी जगन से भेंट होने पर न केवल वह उसमें रूचि लेने का प्रयास करती है बल्कि अपने में रूचि लेने का उसे भी अवसर देती है। जगन के दिमागी खोखलेपन से वह जल्दही उकता जाती है। नीहार का प्रेमी नीर्मल भी उसकी ओर इसी प्रकार आकर्षित होता है। प्रतिभा हरदत्त के साथ फिल्म देखने जाती है तथा प्रो.ज्ञान में अपने उपयुक्त साथी की कल्पना भी करती है। हरदत्त उसकी कमजोरियों की ओर संकेत करते हुए कहता है "असल में मैं ही पूरे तौर पर तुम्हारे साहचर्य के योग्य हूँ। लेकिन प्रतिभा, तुम घोर आत्म-वंचना का शिकार हो।"[१]

प्रतिभा में रोमांस और बुध्दिवाद दोनों हैं। उसके जीवन में उसका प्रभाव दिखाई देता है। हरदत्त उसे कहता है "...तीभा, तुम इस साधारणता से नफरत क्यों करती हो ? इन सीधे-सादे सामान्य भावों से दूर क्यों भागती हो ? यह जीवन और इस जीवन का सारा कोलाहल इसी साधारणता पर टिका है। तुम इससे सदा दूर भागती हो, लेकिन जीवन की गति तो इसी के दम से है।"[२]

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क भँवर पृ- ८७

२. - वही - पृ- १०७

वह प्रो.ज्ञान की ओर भी आकर्षित है और उन्हें अपने लिए उपयुक्त साथी के रूप में कुछ अंश तक कल्पित करती है। लेकिन जब वे उसके आकर्षण के जादू से उसकी ओर खींच आते हैं तो वह उनमें अपनी सारी दिलचस्पी खो बैठती है। उसकी बुध्दिवादी वृत्ति ने उसका जीवन असंतोष और निराशा से भर दिया है। अपने जीवन-साथी के सम्बन्ध में उसने ऊँचा आदर्श स्थापित कर रखा है। वह एक के बाद दूसरे पुरूष को अपनी कसौटी पर परखती है लेकिन कोई भी खरा नहीं उतरता है। बहुत से पुरूष उसकी ओर खींचे आते हैं, वे समझते हैं कि वह उन्हें चाहती है मगर वह केवल उनसे खेलती रहती है। कई बार मन ही मन में उन्हें हीन समझकर उनसे नफरत भी करती है।

प्रतिभा इसप्रकार ज्ञान, जगन और हरदत्त के आकर्षण का केन्द्र तो बनती है पर उनके इस आकर्षण से अपने आप को मुक्त भी कर लेती है। इस सबके बावजूद वह अपनी कमजोरी को दूर नहीं कर पाती। अपने सम्पर्क में आये सभी पुरूषों को वह बच्चा समझती है। हरदत्त के प्रेम-निवेदन का वह मजाक उडाती है। जीवनसत्य से अवगत होकर भी वह काल्पनिकता से बाहर नहीं आती इसीकारण वह निराशा में डूब गई है। अंत में वह अपने आपसे कहती है "हरेक आदमी अपनी खौल के अन्दर महज एक बच्चा है! क्या अपने खौल के भीतर मैं भी सिर्फ एक बच्ची हूँ - बच्ची - जो चाँद को चाहती है और खिलौनों से जिसकी तसल्ली नहीं होती!....लेकिन चाँद बहुत ऊँचा है - बहुत दूर है - नीलाभ - नीलाभ - उफ!"[१]

"भँवर" में नाटककार ने एक ऐसी युवती का चित्र खींचा है, जो खूब पढ़ी-लिखी है, बुध्दिमान है, पर जो जीवन में कहीं चूँक गई है। युवा से लेकर प्रौढ तक सब उसके आकर्षण की आग में जलते हैं लेकिन स्वयं ही भँवर में फँसी प्रतिभा अपनेही स्वप्न के इर्द-गिर्द चक्कर खाती रहती है।

"भँवर" में मनोविज्ञान की प्रधानता होने के कारण यह एक मनोवैज्ञानिक

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क भँवर पृ- १११-१२

12925
A

नाटक है। कुण्ठा तथा व्यक्ति-निष्ठता से पीड़ित प्रतिभा जैसे पात्र किस तरह अपने आप भँवर में फँसते हैं यह दिखाने का प्रयास लेखक ने किया है।

२.१० बड़े-खिलाड़ी :-

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से अश्क का यह नौवाँ नाटक है। इसका प्रकाशन सन १९६७ को हुआ है। इस नाटक में लेखक ने विवाह की समस्या को उठाया है। माता-पिता की नासमझी और बच्चों का अपना मत प्रकट किये बिना उसे चुपचाप मानना कभी-कभी गलत भी हो सकता है। माता-पिता का निर्देशन आवश्यक जरूर है मगर उसमें गलती की सम्भावना भी होती है यह इस नाटक में हमें दिखाई देता है।

सुजला मध्यवर्गीय परिवार की एक सामान्य पढ़ी-लिखी लड़की है। उसके माँ-बाप विवाह के विषय में उसकी राय जाने बिना केवल नाम के लड़के के साथ उसका विवाह तय कर देते हैं। सुजला के भी अपने विचार, अपनी इच्छाएँ हैं यह सोचे बिना विवाह तय होने के कारण सुजला अपनी इच्छा के विरूद्ध सामाजिक बंधनों की खातिर हाँ कर देती है। केवल और उसकी बहन बहुत दिनों तक उनके पड़ोस में रहे हैं मगर फिर भी कभी सुजला ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया है या उससे बात भी नहीं की है। केवल और शीला दोनों सुजला की माँ रत्नप्रभा की सेवा-सुश्रूषा करके उसे अपने जाल में फँसा लेते हैं और रत्नप्रभा प्रभावित होकर केवल से सुजला की शादी तय कर देती है। वह अपने पति पाराशर साहब को भी इस सम्बन्ध के लिए राजी करा लेती है। सुजला असल में विराज को चाहती है परंतु रूढ़ी-परंपरा को तोड़ने का साहस न होने से माता-पिता का विरोध नहीं कर पाती है।

सुजला केवल अपनी बेबसी पर आँसू बहाती रहती है। परिवार के बाकी सभी सदस्य भी इस शादी से संतुष्ट नहीं हैं फिर भी सभी चुप रहते हैं। सिर्फ सुजला का छोटा भाई हरीश इसका विरोध करता है। अगर सुजला रोना छोड़कर शादी के लिए विरोध करे तो हरीश उसका साथ दे सकता है। वह उस शादी का विरोध भी करता

है पर कोई भी उसे समझने का प्रयत्न नहीं करता है।

केवल और शीला की महत्वकांक्षाएँ बढ़ती जाती हैं। शुरू में सिर्फ विवाह हो जाए, कहनेवाले दोनों विवाह तय होने पर दहेज में बहुत कुछ माँगने लगते हैं। कुछ अपने सम्मान की खातिर और कुछ पत्नी के कहने पर पाराशर साहब दहेज में बहुत सारा सामान देने का वायदा कर देते हैं फिर भी छोटे दिल के शीला और केवल अपने आपको नियंत्रित नहीं रख पाते। वे दोनों पाराशर साहब के अंतरंग मित्र और पड़ोसी सन्तराम को नीचा दिखाने का प्रयत्न भी शुरू कर देते हैं। केवल की बहन शीला कहती है "यदि संतराम आया तो मैं शादी में शामिल नहीं हूँगी।"[१] उसकी इस शर्त को देखकर परिवार के सभी लोग नाराज हो जाते हैं। हरीश अपने चाचा से कहता है - "चाचाजी, मुन्नी की शादी के बाद मैं घर छोड़ दूँगा।"[२]

धीरे-धीरे पूरा परिवार इस शादी के विरोध में हो जाता है तब पाराशर साहब भी रूष्ट हो जाते हैं। वे अपने भाई से कहते हैं - "योग मैं यहाँ मुन्नी की शादी नहीं करूँगा, तुम मुझे इनके चक्कर से निकालो। ये लोग बड़े कमिने हैं, इबलाश और हरीश ही ठीक कहते हैं, मुन्नी यहाँ बड़ा दुःख पायेगी।"[३]

केवल और शीला अपनेही हठ पर अड़े रहते हैं। भाई-बहन के इस हठ से उनका ओछापन स्पष्ट होता है। आखिर हैरान होकर पाराशर साहब शादी तोड देते है। वे उन दोनों से कहते हैं "बहुत देर हो गयी है, मैं थक गया हूँ। आप भी जाइए। आराम कीजिए। आप लोगों को लड़कियाँ बहुत मिल जायेंगी, मैं भी कोई लड़का ढूँढ लूँगा।"[४]

शीला और केवल पाराशर और उनकी पत्नी के स्वभाव का अनुचित लाभ उठाना चाहते थे परंतु अपनी कमजोरियों की वजह से अपनेही जाल में फँस जाते हैं और सुजला बर्बादी से बच जाती है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क बड़े खिलाड़ी पृ- १२६
२. - वही - पृ- १०५,१०६
३. - वही - पृ- १४१
४. - वही - पृ- १३९

अश्कजी के नाटकों के लिए समस्या नयी नहीं है। उनके हर नाटक में कोई न कोई समस्या जरूर दिखाई देती है, परन्तु, यहाँ इसके सर्वथा नये और भिन्न दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है।

२:२ रंगमंच की दृष्टि से अश्क के नाटक

नाटक एक दृश्यकाव्य माना जाता है ओर उसकी सार्थकता रंगमंचीयता पर मानी जाती है। नाटक के बिना रंगमंच और रंगमंच के बिना नाटक की कल्पना निरर्थक-सी लगती है। कोई भी नाटक साहित्यिक दृष्टि से कितना भी सफल क्यों न हो पर रंगमंचीय दृष्टि से वह सफल हो सकता है ऐसी बात नहीं। रंगमंच की उपेक्षा कर लिखे गये नाटकों में मंचीयता की दृष्टि से त्रुटियाँ हो सकती है।

जयशंकर प्रसादजी के काल में व्यावसायिक रंगमंच के लिए नाटक लिखें जाते थे तब प्रसादजी ने व्यावसायिक रंगमंचीय नाटको का विरोध किया। "प्रसाद ने नारा लगाया - "नाटको के लिए रंगमंच की रचना होनी चाहिए।" और व्यावसायिक रंगमंचों के मालिकों का नारा था - "केवल रंगमंच के लिए नाटकों की रचना होनी चाहिए।"[१] इसी कारण साहित्यिक नाटक और रंगमंच के बीच का अंतर बढ़ता गया। प्रसाद ने रंगमंचीय व्यावसायिक नाटकों का विरोध कर साहित्यिक नाटक लिखना शुरू कर दिया। आगे अश्कजी ने भी अपना योग दान इसमें दिया।

बचपन से अश्कजी का ध्यान नाटकों की ओर अधिक रहा है। बचपन में उन्होंने द्विजेन्द्रलाल राय, आग़ा हश्र, राधेश्याम जैसे अनेक लेखकों के नाटक पढ़े हैं। अनेक नाटकों में अभिनय भी किया है। वे कहते हैं - "मैंने लगभग सभी प्रसिध्द पश्चिमीय और पूर्वीय नाटककारों की रचनाएँ पढ़ी है, नाटक के आवश्यक उपादनों का परिचय पाया है, पुरातन और आधुनिक ढंग के नाटकों का अन्तर जाना है और अभ्यास से नाटक-कला पर अधिकार प्राप्त कर लिया है।"[२]

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क नाटककार अश्क पृ- ४७

२. - वही - पृ- ३४५

अश्कजी ने नाटकों की रंगमंचीयता पर विशेष ध्यान दिया है। रंगमंच और नाटक की सफलता को ध्यान में रखकर "स्वर्ग की झलक" नाटक की भूमिका में आश्कजी कहते हैं - "यदि आज केवल रंगमंच पर खेले जानेवाले नाटक लिखें जाएँ तो कल रंगमंच भी अपनी वर्षों की नींद से जाग उठेगा। वास्तव में दोनों का आपस में गहरा सम्बन्ध है। आज भी कालेजो में अंग्रेजी से अनुदीत नाटक ही खेले जाते हैं। कारण यही है कि उन्हें अपनी भाषा में उत्तम नाटक नहीं मिलते। मेरा अपना विचार तथा अनुभव है कि रंगमंच को स्फूर्ति प्रदान करने का सबसे अच्छा साधन यह है कि ऐसे नाटक अधिक संख्या में लिखें जाएँ जो रंगमंच पर सुगमता से खेले जा सके।"[१]

अन्य लेखकों कें रोमांसप्रधान नाटकों को जीवन की यथार्थता, सामाजिकता के साथ जोडकर अश्क ने "स्वर्ग की झलक", "भँवर", "कैद और उडान", "अलग-अलग रास्ते" जैसे नाटकों का लेखन किया। डॉ. शिवकुमार शर्मा ने अश्क के नाटकों के संबंध में कहा है - "अश्क ने हिन्दी नाटक को यथार्थ और मंच के निकट लाने में सराहनयी कार्य किया है।"[२] अश्क के नाटक रंगमंचीय कला और गुणों से युक्त हैं। हास्य और व्यंग्य उनकी यथार्थवादी शैली को और भी अच्छा रूप देता है।

अश्क का पहला और एकमात्र ऐतिहासिक नाटक "जय-पराजय" के वस्तुविन्यास में अनावश्यक विस्तार का दोष नजर आता है। पुरानी शैली का होने के कारण लम्बा है। नाटक के दृश्यविधान में इतनी विविधता है और स्थानभेद है कि उसे रंगमंच पर प्रस्तुत करना बहुत कष्टप्रद है फिर भी कुछ परिवर्तन कर इसे रंगमंच पर प्रस्तुत किया जा सकता है। अश्क स्वयं इस नाटक के रंगमंचीय दोषों से परिचित हैं।

"जय-पराजय" के बाद लिखें गये बाकी सभी सामाजिक नाटक कुछ थोड़ीसी त्रुटियों को छोड़कर रंगमंच की दृष्टि से अनुकूल हैं। उनके "स्वर्ग की झलक" नाटक के दृश्यविधान में पात्रों की वेशभूषा, स्वभाव, रूप और आयु का भी निर्देश किया गया है। दृश्यों के बीच पात्रों के अभिनय के लिए भी संकेत दिये गये है।

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क नाटककार अश्क पृ- ४७

२. डॉ.शिवकुमार शर्मा हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ पृ- ६०३-४

अश्क के कुछ नाटक छोड़ दिये तो बाकी सारे नाटक एक ही सेटिंग पर खेले जा सके इसका प्रयास उन्होंने किया है। भारतीय रंगमंच की साधन संपन्नता को देखकर अश्क ने सीधे-सादे सेटिंग की ओर अधिक ध्यान दिया है। "अलग-अलग रास्ते" के तीनों दृश्य पण्डित ताराचन्द के ड्राइंगरूम में खेले जा सकते है। "छठा बेटा" नाटक पूर्णतः सिर्फ बरामदे में अभिनीत हो सकता है। इसीप्रकार "कैद और उड़ान", "अंजोदीदी" "भँवर" ये सब नाटक एकही सेट पर खेले जा सकते हैं। "जरा-जरा से दृश्यों के बाद गिरने और उठनेवाले पर्दों की अवास्तविकता को दूर कर "अश्क" नाटक और रंगमंच को यथार्थ जीवन के निकट ले आये हैं।"[१]

अश्क स्वयं नाटकों में काम करते थे इसी वजह से उन्हें रंगमंच का पूरा अनुभव है। "उन्होंने राजस्थान, मध्यभारत, मध्यप्रदेश, मद्रास, बिहार और पंजाब के विभिन्न नगरों के अपने एकांकियो का अकेले-दम प्रदर्शन करके न केवल सहस्त्रों का मनोरंजन किया, बल्कि एमेचर रंगमंच को बड़ा बल दिया। नाटक लिखने के साथ-साथ स्वयं रंगमंच में भी क्रियात्मक दिलचस्पी लेने का यह फल है कि आज अश्क के एकांकी उत्तर से लेकर दक्षिण भारत तक में खेले जा रहे हैं।"[२]

अश्क ने अपने नाटकों में देश-काल और अभिनय के सन्तुलन का विशेष ध्यान रखा है। उन्होंनें दृश्यविधानों को विवरणपूर्ण करके रंगमंच की अनुकूलता के प्रति भी सतर्कता रखी।

अश्क के नाटकों में संवाद और भाषा प्रायः सरल, रोचक और प्रभावपूर्ण होने के कारण रंगमंचीय दृष्टि से अधिक उपयुक्त है। संवादों के अनुकूल उन्होंने कार्य-संकेतों का प्रयोग किया है। "अंजोदीदी", "कैद और उड़ान" में केवल भावनात्मक संवाद हैं। अश्क के "पैंतरे", "छठा बेटा" और "स्वर्ग की झलक" इन तीनों नाटकों में हास्य और व्यंग्य की प्रधानता दिखाई देती है। उनका "अलग-अलग रास्ते" नाटक रंगमंच पर सफल रहा। यह नाटक रशियन टेलिव्हिजन पर भी खेला जा चुका है।

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क   नाटककार अश्क   पृ- ५०
२.   - वही -   पृ- ५३

गोपालकृष्ण कौल के मतानुसार "दृश्यविधान की ये विशेषताएँ अश्क के सभी नाटकों में मिलती है। इन रंग-संकेतो में पात्रों की वेशभूषा और स्थिति को उनके चरित्र और स्वभाव के अनुकूल ही पेश किया गया है और सम्वादों, कार्य-व्यापार और वस्तुओं को नाटक में गति देने के लिए प्रतीकात्मक या संकेतात्मक ढ़ंग से प्रयुक्त किया गया है, जिनकी उपस्थिति से रंगमंच पर नाटकीय प्रभाव में तीव्रता आती है।"[१]

अश्क के "छठा बेटा", "कैद और उड़ान" तथा "अलग-अलग रास्ते" आदि संकलनत्रय की दृष्टि से सफल नाटक हैं। इनमें स्थान, समय और कार्यसम्पादन की एकता दिखाई देती है। "पैंतरे" में समय की एकता का संतुलन तो नहीं है फिर भी ऐसी एकसूत्रता है जो उसे स्वाभाविकता प्रदान करती है। "स्वर्ग की झलक" में काल का संकलन है परंतु स्थान संकलन का अभाव है, क्योंकि इसका कथासूत्र कई स्थानों पर फैला हुआ है। "अंजोदीदी" में ऐक्य का अभाव है पर प्रभाव की एकता को बहुत अच्छी तरह प्रकट किया गया है।

अश्क के सभी नाटको में "जय-पराजय" को छोड़कर अन्य सभी नाटक प्रायः रंगमंच की दृष्टि से अनुकूल तथा सफल नजर आते हैं। रंगमंच के विकास में वे भी अपना योगदान दे चुके है इसीकारण अश्क सफल नाटककार माने जाते है।

२:२:१ **निष्कर्ष :**

अश्क के नाटको में उनका पहला और एकमात्र ऐतिहासिक नाटक छोड़कर बाकी सभी सामाजिक नाटक हैं। उनके ज्यादातर नाटक समस्याप्रधान ही हैं। "जय-पराजय" में अश्क ने राजपुतों की आदर्श और मर्यादा की थोथी अहंभावना पर व्यंग्य किया है। "स्वर्ग की झलक" में आधुनिक शिक्षा और विवाह की समस्या को लिया गया है। "छठा बेटा" में पारिवारिक कलह याने पिता-पुत्रों के कटु-सम्बन्धों और एक-दूसरे की दायित्वहीनता की भावना पर हास्यपूर्ण व्यंग्य किया है। "कैद और उड़ान" में नारी समस्या के दो

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क नाटककार अश्क पृ- ४९

पहलुओं का चित्रण किया है। "कैद" में सामाजिक मर्यादा में आबध्द, घुट-घुटकर जिन्दगी जीनेवाली नारी और "उड़ान" में विद्रोह कर अपने स्वस्थ मार्ग की खोज में निकल पड़नेवाली नारी का चित्रण किया गया है। "अलग-अलग रास्ते" में विवाह और प्रेम की समस्या को लिया गया है। "अंजोदीदी" में नियमबध्द जीवन को सनक बनानेवाली अंजो के चरित्र पर प्रकाश डाला है। "भँवर" में कुण्ठा तथा व्यक्तिनिष्ठा से पीड़ित नायिका भँवर में कैसी फँस जाती है यह दिखाया है। " पैंतरे" नाटक में मकान की दुर्लभता की समस्या को लेकर फिल्मि जगत के झूठ, खुशामद, स्वार्थ और पैंतरेबाजी से भरे जीवन की झलक प्रस्तुत की है। "बड़े खिलाड़ी" में अश्क ने विवाह की समस्या को उठाया है। इस प्रकार अश्क ने समाज के यथार्थ को अपने नाटकों में समस्याओं के रूप में प्रस्तुत किया है। बचपन से ही अश्क को नाटक आकर्षित करते रहे हैं। उन्होंने नाटक पढ़ने तथा देखने के साथ-साथ उनमें अभिनय भी किया है इसीकारण रंगमंच के गहरे ज्ञान से वे परिचित हैं। उन्होंने रंगमंच पर खेले जानेवाले नाटक लिखें और हिंदी रंगमंच के विकास में अपना योगदान दिया। अत्यल्प त्रुटियों को छोड़कर "वस्तुविन्यास", "संवाद" "दृश्यविधान", "रूपसज्जा", "रंगसंकेत" आदि सभी दृष्टियों से अश्क के नाटक रंगमंचियता के अच्छे उदाहरण माने जा सकते हैं।

-o-o-o-o-